दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाएँ और साहित्य: इतिहास, संस्कृति और साहित्य- विशेष संदर्भ गारो, मिज़ो, मोग, मुंडा, संथाल और खासी"

आयोजक

हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर-22

एवं

जनजातीय अनुसंधान और सांस्कृतिक संस्थान (TR&CI), त्रिपुरा सरकार, अगरतला

दिनांक: 30 और 31 जुलाई, 2025

स्थान: संगोष्ठी कक्ष, त्रिपुरा विश्वविद्यालय अतिथि गृह, सूर्यमणिनगर-22

परिचय:

त्रिपुरा 19 विशिष्ट जनजातीय समुदायों का निवास स्थान है, जिनकी प्रत्येक की अपनी अनूठी भाषाएँ और साहित्य हैं, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं, लेकिन शैक्षिक चर्चाओं में अभी तक इनका पर्याप्त अन्वेषण नहीं हुआ है। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी गारो, मिज़ो, मुंडा, औरंग, संथाल, मोग और खासी सहित त्रिपुरा की लुप्तप्राय भाषाओं पर प्रकाश डालने का लक्ष्य रखती है। इन भाषाओं और साहित्य को प्रलेखित करके, यह पहल जनजातीय भाषाओं और साहित्य की अधिक मान्यता और संरक्षण को बढ़ावा देगी। बहुभाषी अनुसंधान, विशेष रूप से हिन्दी में, को प्रोत्साहित करके यह कार्यशाला इन भाषाओं और साहित्य को राष्ट्रीय शैक्षिक और सांस्कृतिक चर्चा में एकीकृत करने का प्रयास करती है।

उद्देश्य:

- त्रिपुरा की जनजातीय भाषाओं, विशेष रूप से गारो, मिज़ो, मुंडा, ओरांग, संथाल, मोग और खासी, सहित लुप्तप्राय भाषाओं पर प्रकाश डालना।
- जनजातीय भाषाओं और साहित्य की अधिक मान्यता और संरक्षण को बढ़ावा देना।
- जनजातीय भाषाओं पर शैक्षिक अनुसंधान और प्रकाशनों को प्रोत्साहित करना।

दायरा और प्रमुख विषय:

संगोष्ठी निम्नलिखित विषयों पर केंद्रित होगी:

1. भाषाई विविधता: त्रिपुरा की जनजातीय भाषाएँ, विशेष रूप से गारो, मिज़ो, मुंडा, औरंग, संथाल, मोग और खासी, सहित लुप्तप्राय भाषाएँ।
2. सांस्कृतिक महत्व: जनजातीय भाषाओं की जनजातीय और सामुदायिक एकता में भूमिका।
3. संरक्षण: जनजातीय भाषाओं के प्रलेखन और प्रचार के लिए रणनीतियाँ।

4. आधुनिक अनुकूलन: समकालीन सांस्कृतिक और भाषाई विविधता में जनजातीय भाषाओं का एकीकरण।

कार्य-प्रणाली:

संगोष्ठी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाएगी:

- शोध पत्र प्रस्तुति: विद्वान, शोधकर्ता और समुदाय के प्रतिनिधि जनजातीय भाषाओं, साहित्य और सांस्कृतिक महत्व पर शोध प्रस्तुत करेंगे।
- पैनल चर्चाए
- प्रकाशन: शोध पत्रों और कार्यवाही का हिन्दी और अंग्रेजी में संकलन व्यापक प्रसार के लिए।

लक्षित दर्शक:

- विश्वविद्यालय के सभी शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएँ।
- भाषा विशेषज्ञ, इतिहासकार और विद्वान।
- गारो, मिज़ो, मुंडा, औरंग, संथाल, मोग और खासी जैसे समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले जनजातीय भाषा विशेषज्ञ।
- सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्थानों के नीति निर्माता और सांस्कृतिक समर्थक।
- क्षेत्रीय अध्ययन और सांस्कृतिक संरक्षण में रुचि रखने वाले छात्र और युवा शोधकर्ता।

अपेक्षित परिणाम:

संगोष्ठी से निम्नलिखित परिणामों की अपेक्षा है:

- त्रिपुरा के जनजातीय समुदायों की साहित्य और भाषा का एक व्यापक प्रलेखन।
- शैक्षिक साहित्य में योगदान के लिए संगोष्ठी की कार्यवाही का हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशन।
- त्रिपुरा की साहित्य, भाषा और लुप्तप्राय भाषाओं में अंतर-विषयक अनुसंधान के लिए नए अवसर।
- त्रिपुरा की जनजातीय साहित्य, भाषा, संस्कृति और इतिहास के प्रति जागरूकता में वृद्धि।

महत्वपूर्ण तिथियाँ:

- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि 10/07/2025
- आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15/07/2025
- संगोष्ठी सूचीबद्ध करने की तिथि 20/07/2027

संगोष्ठी संरचना:

कार्यशाला का आयोजन हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय और TR&CI, अगरतला के सहयोग से किया जा रहा है। आयोजन समिति में शामिल हैं:

मुख्य संरक्षक: कुलपति, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर-22

संरक्षक: निदेशक, जनजातीय अनुसंधान और सांस्कृतिक संस्थान, त्रिपुरा सरकार, अगरतला

संयोजक: एसोसिएट प्रो. डॉ. बीना देबबर्मा, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सह-संयोजक: श्रीमती खुमतिया देबबर्मा, सहायक प्रोफेसर, कॉकबरक विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सह-संयोजक: डॉ. पद्मा कुमारी चकमा, सहायक प्रोफेसर, बंगाली विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सदस्य:

आरती रियांग, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

मोलिना देबबर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

जितेंद्र रियांग, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

रीता त्रिपुरा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

सैमसन देबबर्मा, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

रक्तिमा डेका, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

बर्षा दास, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

रिपोर्टिंग:

- सुश्री पल्लवी कुमारी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (30/07/2025)
- श्रीमती नम्रता बनिक, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (30/07/2025)
- श्री निखिल पांडे, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (31/07/2025)
- श्री निखिल, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (31/07/2025)

निष्कर्ष:

उत्तर पूर्व भारत की जनजातीय भाषाओं और साहित्य पर यह राष्ट्रीय संगोष्ठी गारो, मिज़ो, मुंडा, औरंग, संथाल, खासी, मोग सहित त्रिपुरा की लुप्तप्राय भाषाओं की समृद्ध भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक विरासत को प्रलेखित करने और प्रचार करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करेगी। शैक्षिक अनुसंधान, सांस्कृतिक संरक्षण और टिकाऊ प्रथाओं को जोड़कर, यह संगोष्ठी जनजातीय भाषाओं और साहित्य पर राष्ट्रीय चर्चा में योगदान देगी और भावी पीढ़ियों को अपनी भाषाओं को महत्व देने के लिए प्रेरित करेगी। हम इस पहल को सफल बनाने के लिए सभी हितधारकों के समर्थन और भागीदारी की अपेक्षा करते हैं।

डॉ. बीना देबबर्मा
राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
binadebbarma@tripurauniv.ac.in

7005338952 (M)